THE DEPUTY CHAIRMAN: Please sit down.

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE: No, no. This is a reflection on me. The issue being raised by the Member belonging to my party is something else. (*Interruptions*)

THE DEPUTY CHAIRMAN: I said, "Don't argue with the Chair." Don't argue with the Chair.

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE: *

THE DEPUTY CHAIRMAN: It cannot go on record. Sit down. Record is in my hand, not in your hand. (*Interruptions*) Sit down. (*Interruptions*) Unfortunately, you did not hear what the Leader of the Opposition said today. He said that we never had a Zero Hour in this House; and we don't want to start this. (*Interruptions*)

SHRI NILOTPAL BASU: It is very unfortunate.

उपसभापति : सरला जी, आपको बोलना है या नहीं बोलना है । ...**(व्यवधान)**...I will call the other name, if you are not going to speak.

SPECIAL MENTIONS

NEED TO DECLARE PREMCHAND JAYANTI AS LITERATURE DAY

श्रीमती सरला माहेश्वरी (पश्चिमी बंगाल) : उपसभापति महोदया, आज का दिन बहुत महत्वूर्ण दिन है । विशेष उल्लेख के जरिए मैं यह मांग करना चाहती हूं कि प्रेमचंद जयंती को साहित्य दिवस के रूप में घोषित किया जाए । आज 31 जुलाई का दिन भारत के किसानों, शोषित-पीड़ित जनता के महान लेखक प्रेमचंद का जन्मदिन है । प्रेमचंद के साहित्य के बारे में महात्मा गांधी ने कहा था कि अगर हमारे आजादी के आंदोलन के सारे दस्तावेज नष्ट हो जाएं तो भी प्रेमचंद के साहित्य के जरिये हम आजादी के आंदोलन का इतिहास लिख सकते हैं । प्रगतिशील लेखक संघ के संस्थापक अध्यक्ष के रूप में प्रेमचंद ने न सिर्फ सौन्दर्य के नये मानदंड के निर्माण का आह्वान किया था बल्कि यह भी कहा था कि साहित्य राजनीति के आगे चलने वाली मशाल है । साहित्य के प्रति प्रेमचंद की गहरी निष्ठा थी । समाज की गहरी तहों में क्या कुछ बन-बिगड़ रहा है, यदि किसी को भी इसकी थाह पानी है तो साहित्य के अलावा उसका और कोई विश्वसनीय माध्यम नहीं हो सकता । इसीलिए प्रेमचंद ने कहा था कि लेखक को यश और धन की बिना कामना किए जनता की सेवा में लगातार लिखते चला जाना चाहिये । किन्तु आज लोभ-लाभ से चालित पूंजीवादी समाज की इस आपाधापी ने साहित्य को जीवन में लगभग

* Not Recorded.

अप्रासंगिक बना दिया है । साम्राज्यवादी संस्कृति के दबाव के चलते लोग अपनी निज भाषा और जातीय अस्मिता तक को भूलने लगे हैं ।

ऐसे समय में राष्ट्रीय स्वतंत्रता की रक्षा के लिए हमें जातीय साहित्य की रक्षा के प्रति बहुत ज्यादा जागरूक होने की जरूरत है । इसीलिए प्रेमचंद जयंती के मौके पर सरकार से मेरी यह हार्दिक अपील है कि वह 31 जुलाई के दिन को साहित्य दिवस के रूप में घोषित करे और उस दिन ऐसे तमाम कार्यक्रम अपनाये जिनके जरिये हम लेखकों और साहित्यकारों को रचनात्मक संघर्ष की प्रेरणा और संरक्षण प्रदान कर सकें । मैं समझती हूं कि यह पूरा सदन और सरकार इसके साथ सहमत होगी । धन्यवाद ।

श्री सुरेश पचौरी (मध्य प्रदेश) : सरकार को साहित्य दिवस घोषित करना चाहिए क्योंकि यह मुंशी प्रेम चन्द का जन्म दिवस है। मैं सरला माहेश्वरी जी के साथ अपने को एसोसिएट करता हूं। ...*(Interruptions)*...

THE DEPUTY CHAIRMAN: The whole House associates itself with this Special Mention.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF URBAN DEVELOPMENT AND POVERTY ALLEVIATION (SHRI O. RAJAGOPAL): Madam, I would convey the sense of the House and the feelings of the Members, to the concerned Minister.

श्रीमती सरला माहेश्वरी : माननीय उप प्रधानमंत्री जी बैठे हुए हैं।

उप प्रधानमंत्री (श्री लाल कृष्ण आडवाणी): हम सरला जी के आभारी हैं कि उन्होंने स्मरण करवाया।

SHRI K. NATWAR SINGH (Rajasthan): Madam, the National Memorial is still incomplete. I hope, it will be completed now.

Health care sector hit by duty hike

DR. ALLADI P. RAJKUMAR (Andhra Pradesh): Madam, I am fortunate enough to have the Deputy Prime Minister here, and I want him to put pressure on the Finance Minister to withdraw the hike in duty on equipment used in the healthcare sector.

A drastic increase in duty on medical equipment and devices has taken a heavy toll of the healthcare sector. A basic duty of 5% on life saving medical equipment and devices, and an additional duty of 20.8% on several others, through a CVD of 16%, has hit the common man.